# 14 / 02 / 78 की अव्यक्त वाणी

## पर आधारित योग अनुभूति

### बापदादा की समीप आत्मा की निशानियाँ व विश्व कल्याणकारी होने का अनुभव

➢➢ मैं आत्मा विश्व कल्याणकारी हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा चमकती हुई मणि भृकुटि सिंहासन पर बिराजमान हूँ

→ मैं आत्मा बाप समान हूँ

■ मैं आत्मा बापदादा की सदा की समीप आत्मा हूँ

➳ _ ➳ अब मैं विशेष आत्मा

→ स्थिति में

→ गुणों में

→ कर्तव्यों में

■ बाप समान सम्पन्न ओर सम्पूर्ण अवस्था का मैं आत्मा अनुभव कर रही हूँ

➳ _ ➳ जैसे बाप हर सेकेण्ड और संकल्प में विश्व कल्याणकारी है

→ ऐसे मैं आत्मा भी बाप समान विश्व कल्याणकारी हूँ

■ मुझ आत्मा का हर संकल्प हर आत्मा के प्रति

■ और प्रकृति के प्रति शुभ भावना वाला है

■ अब मैं आत्मा एक भी संकल्प शुभ भावना के सिवाए नहीं करती हूँ

➳ _ ➳ मुझ आत्मा के हर संकल्प रुपी बीज में

→ शुभ कामना

→ शुभ भावना

→ कल्याण की भावना

→ सर्व को बाप समान बनाने की भावना

→ निर्बल को बलवान बनाने की भावना

→ दु:खी अशान्त को स्वयं की प्राप्त हुई शक्तियों के आधार से सदा सुखी,शान्त बनाने की भावना समाई हुई है

■ अब यह सर्व रस या सार मुझ आत्मा के हर संकल्प में भरा हुआ है

■ कोई भी संकल्प रूपी बीज इस सार से खाली, व्यर्थ नहीं है

■ कल्याण की भावना से सदा समर्थ है

➳ _ ➳ मुझ आत्मा का हर बोल रूहानी साज़ के समान

→ उत्साह और उमंग दिलाने वाला है

→ मैं आत्मा अपने बोल के द्वारा कोई भी उदास आत्मा को भी

■ बाबा से मिलन करा खुशी, सुख, आनंद का अनुभव कराती हूँ

➳ _ ➳ में आत्मा कर्मयोगी होने के कारण, मेरा हर कर्म चरित्र के समान गायन योग्य है

→ मुझ आत्मा के हर कर्म की महिमा, कीर्तन करने योग्य है

■ मुझ आत्मा का देखना अलौकिक, चलना अलौकिक है

■ मुझ आत्मा के हर कार्य और इन्द्रियों की महिमा अपरमपार है

■ मुझ आत्मा के हर कर्म महान और महिमा योग्य है

➳ _ ➳ मैं आत्मा हर सेकेण्ड, सम्बंध सम्पर्क में आने वाली आत्मा को

➳ _ ➳ मैं आत्मा सर्व कामनाओं की प्राप्ति का अनुभव करा रही हूँ

→ कोई आत्मा को शक्ति का

→ कोई आत्मा को शांति का

→ कोई आत्मा को खुशी का

→ कोई आत्मा को प्रेम का

→ किसी आत्मा की मुश्किल को सहज करने का

→ किसी अधीन आत्मा को अधिकारी आत्मा बनाने का

→ किसी उदास आत्मा को हर्षित करने का

- इस प्रकार मुझ विश्व-कल्याणकारी महान् आत्मा का सम्पर्क सदा
- हर आत्मा को उमंग और उत्साह दिलाता है
- परिवर्तन का अनुभव कराता है
- छत्रछाया का अनुभव कराता है

➳ _ ➳ मैं आत्मा बापदादा की स्नेही, सहयोगी, तपस्वी मूर्त समीप आत्मा हूँ

→ मैं फरिश्ता बापदादा से मिलन मनाने उड़ चलती हूँ सूक्ष्मवतन की और

- जहा बापदादा बाहे पसारे मेरा इंतज़ार कर रहे है

➳ _ ➳ मैं आत्मा बापदादा के एकदम सन्मुख हूँ

→ बापदादा की दुआओं भरी दृष्टि मुझ आत्मा को मिल रही है

- बापदादा का वरदानी हाथ मुझ आत्मा के सिर पर है

➳ _ ➳ और उन्होंने मुझ आत्मा को

→ निरन्तर योगी भवः

→ निरन्तर सेवाधारी भवः

→ विश्व कल्याणकारी भवः

→ बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण भवः

- के वरदान से मुझ आत्मा की बुद्धि रुपी झोली भर रहे है

➳ _ ➳ मैं आत्मा बाबा से वायदा करती हूँ,

→ की अब मैं आत्मा तीव्र पुरुषार्थ ही करुंगी और

- जो सोचा, जो भी प्लान बनाया है
- उसको तुरंत प्रैक्टिकल में अमल करूंगी

➳ _ ➳ मैं आत्मा कल्प कल्प की विजयी आत्मा हूँ

→ विजय मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है

- मैं आत्मा सफलतामूर्त हूँ

➳ _ ➳ मैं आत्मा अपनी इस सीट पर सेट हो

→ अशरीरिपन का अनुभव कर रही हूँ

- शिव बाबा की समीपता और अलौकिकता का अनुभव कर रही हूँ
- और वापस अपने तन में अवतरित होती हूँ